International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Vol. 1 No.2
Nov – Dec 2013

दलित कविता और पौराणिक दलित पात्र

प्रा. सिंधू खिलारे

हिंदी विभाग, उमा महाविद्यालय, पंढरपुर, जि.सोलापुर - महाराष्ट्र

सारांश:

यह शोधपत्र हिंदी दलित कविता में पौराणिक दलित पात्रों के चित्रण का अध्ययन प्रस्तुत करता है। साहित्य में दलित पात्रों की छवि सदियों से सवर्ण समाज द्वारा किए गए अन्याय और शोषण का आईना रही है। दलित कविता का मूल उद्देश्य धर्म और जाति व्यवस्था की बेड़ियों को तोड़कर समानता और मानवमुक्ति का संदेश देना है।

हिंदी कवियों ने पौराणिक पात्रों जैसे – **शबरी, शम्बूक और कर्ण** – को केंद्र में रखकर दलित चेतना को स्वर दिया है। शबरी को भक्ति और समर्पण की प्रतीक, शम्बूक को समता और कर्मप्रधान विचारधारा का पक्षधर, तथा कर्ण को संघर्षशील और आदर्श योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। इन पात्रों के माध्यम से कवियों ने यह दर्शाया है कि दलित समाज में भी महानता, प्रतिभा और श्रेष्ठता के गुण विद्यमान हैं, जिन्हें जातिगत व्यवस्था ने दबाने का प्रयास किया।

निष्कर्षतः, हिंदी दलित कवियों ने पौराणिक पात्रों के जरिए दलित समाज को प्रेरणा दी है। इनका चित्रण न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि आज के समाज में समानता, न्याय और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए भी सार्थक है।

प्रस्तावना:

मराठी और हिंदी दलित पात्रों का जो चित्रण साहित्य एवं कविता में हमें दिखाई देता है। वह मानवता के विरोधी समाज का आईना है। इन पात्रों पर अत्याचार और अन्याय की एक लंबी परंपरा हमें कविताओं में दिखाई देती है। सवर्ण समाज से भरे हुए लोगों के बिच दलित पात्र छटपटाता हुआ हमें नजर आता है। परंपरागत रूढिवादी विचारों के कारण आज भी उन्हें प्रताडित किया जाता है। दलित पात्रों की विकास बाधा सवर्ण समाज की मानसिकता है। शिक्षा पाकर दलित पात्र अपना विकास करना चाहते है, किंतु सवर्ण मानसिकता आज उनके विकास में रोडा बनकर खडी है।

हिंदी दलित कविता में 'पौराणिक दलित पात्र':

सदियों से मनुवादी व्यवस्था द्वारा दी गई विषमता की कालकोठरी से दलितों को मुक्त करना दलित कविता का उद्देश्य है। धर्मव्यवस्था, जातिव्यवस्था तथा अन्याय, अत्याचार की बेडियों को तोडकर मानवमुक्ति का संदेश आज का कवि देता है। पौराणिक पात्र इस प्रकार से आसानी से बाहर नहीं आ पाए।

मराठी की तरह हिंदी दलित कविता में फुटकर रूप में दलित पात्र नहीं मिलते। हिंदी कवियों ने पौराणिक दलित पात्रों को चुनकर उनके विचार वृत्ति तथा कार्य को काव्य के जरिए हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। हिंदी कवियों का यह कार्य स्वनोचित है।

हिंदी कवियों के पौराणिक दलित पात्रों का चित्रण निम्नांकित है-

1) शबरी:

'शबरी' त्रेता युग की एक दीन-दलित नारी जिसका मार्मिक एवं प्रभावशाली चित्रण कवि नरेश मेहता ने किया है। शबरी की कथा निम्नवर्ग की एक साधारण स्त्री के आत्मिक एवं अध्यात्मिक संघर्ष की ऐसी कथा है जो रामायण के शीर्षस्थ पात्रों, चरित्रों में भी अपनी पहचान बनाई रखती है।

शबरी एक सहृदय नारी थी, जिसका मन प्यार और दया से ओतप्रेत था। पशु-पक्षियों का शिकार कर जीवनयापन करना उसे पसंद नहीं था। उसे अपना घर बुचडखाना जैसे लगता था-

"घर क्या था बुचडखाना था,
माँस महकता रहता,
कोई छूरी से काटता
रक्त -लकीर भूमि पर।"1

शबरी एक मेहनती स्त्री है। इसका वर्णन कवि करता है-

"सुर्योदय के पहले ही,
गुरू-गोशाला में होती,
दाना-पानी दे सबको,
तब गाएँ दुहती होती,
ताजे गोबर से नित ही,
तब आँगन लीपे जाते,
आश्रम की होती नित्य सफाई।"2

प्रभु की सेवा करने की इच्छा से वह भागी थी। इसलिए उसकी हत्या करने के लिए उसके परिजन आश्रम पहुँचे। वहाँ वह भक्ति में लीन थी-

"अब भी शबरी तन्मय थी,
था दीपक भी तो निश्चल,
दिग्विमूढ़ वह खडा हुआ था,
शबर और शाबर-दल।"3

शबरी अब मनुष्य नहीं रही। वह मानवजाति से उपर उठ चुकी है। इसका चित्रण कवि ने किया है-

"जब तक शबरी शुद्रा थी,

थी तब तक वह प्राकृतजन,

अब वह नर से भी उपर

हे! शक्तिदेवी नारायण,

वह जन्म-मरण से उपर।"4

शबरी को मनुष्य जाति की क्षुद्रता का सही ज्ञान प्राप्त हुआ है, इसलिए वह प्रार्थना करती है-

"तेरी विशाल रचना में,

मैं ज्हास-पात ही केवल,

शबरी को तो है तू ही,

आराध्य और बस तप-बल।"5

उपर्युक्त पंक्तियों से शबरी के असामान्य और असाधारण होने का परिचय होता है। इस तरह कवि नरेश मेहता ने 'शबरी' में शबरी जैसी दलित और अछूत नारी का चित्रण किया है।

2) शम्बूक:

'शम्बूक' खंडकाव्य में 'शम्बूक' का चरित्र महत्त्वपूर्ण है। भले ही इसमें राम राजा के रूप में प्रस्तुत हुए है। फिर भी कथावस्तु का मूलाधार 'शम्बूक' पर आधारित है। अत: हम उसे प्रस्तुत खंडकाव्य का प्रधान नायक भी कह सकते है। शम्बूक एक निम्न जाति में उत्पन्न साधारण भूमि-पुत्र है, जो उच्चवर्ग के द्वारा प्रताडित एवं तिरस्कृत हुआ है। वह समता का पक्षधर है-

कवि ने शम्बूक को एकशूद्र एवं भूमि-पुत्र दिखाया है-

"शुद्र हूँ मैं,

मानव समाज में,

मेरा अस्तित्व बहुत अल्प है।"6

शम्बूक आधुनिक विचारों से संपन्न साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है-

"वर्ण से होगा नहीं अब त्राण,

कर्म से ही मनुज का कल्याण,

जन्म से निश्चित न होगा वर्ण,

वर्ग तक सीमित न होगा स्वर्ण,

कर्म से ही श्रेष्ठता अधिकार,

कर्म सबके लिए सम आधार।"7

अत: हम कह सकते है कि शम्बूक का चरित्र आज के युग का परिलक्षित होता है। वह व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसकी श्रेष्ठता का विधान कर्म को मानता है न कि जाति एवं वर्ण को। शम्बूक समता का पक्षधर होने के साथ-साथ, स्पष्टवक्ता, निर्भिक भी है। अत: अपने विचारों से आज के समान में व्याप्त बुराईयों, वर्ग सीमित व्यवस्था पर करारा व्यंग करता है और स्वस्थ्य समाज और व्यवस्था के लिए कर्मप्रधान जीवनप्रणाली को महत्त्वपूर्ण मानता है।

3) कर्ण:

'कर्ण' महाभारत महाकाव्य का अत्यंत यशस्वी पात्र है। उसका जन्म पांडवों की माता कुंती के गर्भ से हुआ था। कुंती अविवाहित थी इसलिए उसने कर्ण को मंजूषा में रख पानी में बहा दिया। वह मंजूषा अधिरथ नाम के सूत को मिली। अधिरथ की कोई संतान नहीं थी, इसलिए उन्होंने और उनकी पत्नी राधा ने कर्ण को अपना बच्चा मान लिया।

कर्ण का शुद्रत्व कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

"जिसके पिता सूर्य थे और माता कुंती,
उसका पलना हुई धार बहती हुई पिटारी,
चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला सूत-पूत्र कर्ण सभी,
युवकों में अद्भूत वीर।"8

हस्तिनापुर के रणकौशल मैदान में अर्जुन से लडने के लिए कर्ण को इसलिए रोका गया कि वह सूतपूत्र है। वही दुर्योधन ने उसे अपना मित्र बनाकर अंगदेश का राजा बना दिया।

"अर्जून से लडना हो तो,
मत बनो सभा में मौन,
नाम-धाम कुछ कहो,
बताओ! तुम जाति हो कौन?"9

एक दिन परशुराम कर्ण की जाँघपर सिर रखकर सो रहे थे, तब कर्ण सोचता है-

"हाय कर्ण! तु क्यों जन्मा था?
जन्मा तो क्यों वीर हुआ?
धँस जाए वह देश अतल में,
गुण की जहाँ नहीं पहचान,
जाति, गोत्र के बल से ही,
आदर पाते है जहाँ सूजान।"10

कर्ण का जीवन, कर्ण का व्रत, कर्ण के वचन सब आदर्श थे। एक शूद्र, दलित होकर भी उसने इतने बडे आदर्श विश्व के सामने रखे है। कवि कर्ण के चित्रण से तमाम दलित, पीडित को बदल देना चाहता है। कर्ण का जीवन संघर्ष, दुविधा से भरा हुआ था।

इस तरह रामकुमार वर्मा की कविता एकलव्य के निहित गुणों को उजागर किया गया है। समाज जिन्हें शुद्र मानता है, उनमें सचमुच श्रेष्ठता के गुण दिखाई देते है। कई बार वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था के कारण वे अपने गुणों का प्रदर्शन नहीं कर पाते। वे अपना विकास नहीं कर पाते और अपनी प्रगति से वंचित रह जाते है।

निष्कर्ष:

हिंदी कवियों ने पौराणिक दलित पात्र चुने है लेकिन उन्होंने आज के दलित की दशा का जिम्मेदार उन्हें नहीं ठहराया और न गुस्सा उतारा है। उन्होंने पौराणिक दलित पात्रों को अपने-अपने काल में सर्वश्रेष्ठ साबित किया है। शबरी को श्रेष्ठ भक्त के रूप में, शम्बूक को अन्यायी समाजव्यवस्था पर विजय प्राप्त करते हुए और कर्ण को महान योध्दा के रूप में दिखाया है। हिंदी कवियों के इन दलित पात्रों के चित्रण से दलित को प्रेरणा मिलती है।

संदर्भ सूची:

1. नरेश मेहता: शबरी, पृ.27
2. वही, पृ.28
3. वही, पृ.29
4. वही, पृ.30
5. वही, पृ.31
6. डॉ. जगदीश गुप्त: शम्बूक, पृ.14
7. वही, पृ.8
8. रामधारी सिंह 'दिनकर': रश्मीरथी, पृ.13
9. वही, पृ.32
10. वही, पृ.35